

● **05** दूध का दूध और पानी का पानी: इतिहास के नामों पर पुनर्विचार क्यों जरूरी है? जब● **06** # दिल की भाषा समझने में महिलाएं अधिक कुशल?● **08** कांग्रेस - भाजपा भिड़त के बाद बाबूलाल मरांडी पहुंचे जमशेदपुर, मामला गरमाया

ड्राइवर भाइयों की सुरक्षा, सम्मान और अधिकार - मारपीट होने पर क्या करें?

अपनी सुरक्षा करें, कानून का साथ लें — आत्मरक्षा आपका अधिकार है, बदला लेना नहीं— प्रधान संपादक: संजय कुमार बाठला,
परिवहन विशेष— सारथी एकता वाहन
एसोसिएशन (S.E.V.A.) सेवाग्रुप
INDIA, राष्ट्रीय अध्यक्ष: रामकुमार
मलिक

भूमिका: देश की अर्थव्यवस्था के सारथी देश का ड्राइवर दिन-रात सड़क पर रहकर देश की अर्थव्यवस्था को गति देता है। अनाज, दवाई, पेट्रोल, सामान — सब कुछ उसी के भरोसे चलता है। लेकिन ड्यूटी के दौरान कई बार ड्राइवरों को गाली-गलौज, धमकी, मारपीट और अपमानजनक व्यवहार का सामना करना पड़ता है।

सड़क पर किसी ड्राइवर के साथ मारपीट करना, उसे धमकाना या अपमानित करना किसी भी परिस्थिति में हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। ड्राइवर भी किसी का बेटा, भाई, पति और पिता है। उसके घर में भी कोई उसका इंतजार करता है।

संवैधानिक अधिकार और मूल अधिकार: ड्राइवर भी नागरिक है

1. अनुच्छेद 21 — प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का अधिकार संविधान का अनुच्छेद 21 हर नागरिक को जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार देता है। किसी को भी कानून की प्रक्रिया के बिना जीवन से वंचित नहीं किया जा सकता। ड्राइवर की जान की रक्षा राज्य का कर्तव्य है।

2. अनुच्छेद 19 — गरिमापूर्ण जीवन हर नागरिक को सम्मानपूर्वक जीने का अधिकार है। सड़क पर अपमान और मारपीट इस अधिकार का उल्लंघन है।

3. अनुच्छेद 14 — विधि के समक्ष समानता कानून की नजर में ड्राइवर और आम नागरिक समान हैं। प्रभावशाली व्यक्ति द्वारा मारपीट भी उतनी ही अपराध है।

4. आत्मरक्षा का अधिकार — भारतीय न्याय संहिता (BNS) 2023 भारतीय न्याय संहिता की धारा 34 से 44 तक आत्मरक्षा (Private Defence) का अधिकार देती हैं। यदि कोई आप पर हमला करता है, तो आप स्वयं को बचाने के लिए आवश्यक और परिस्थितियों के अनुरूप बल का प्रयोग कर सकते हैं।

> महत्वपूर्ण सीमा: आत्मरक्षा का अधिकार असंमित नहीं है। इसका उद्देश्य खतरे से बचना है, बदला लेना या खतरा



समाप्त होने के बाद हमला जारी रखना नहीं। खतरा समाप्त होते ही बल प्रयोग भी समाप्त होना चाहिए।

मुख्य बिन्दु: मारपीट होने पर ड्राइवर को क्या करना चाहिए? — 7 स्टेप गाइड

1. सबसे पहले अपनी जान बचाएँ, घबराएँ नहीं। सुरक्षित स्थान पर जाने की कोशिश करें। भीड़भाड़ वाले सुरक्षित स्थान या पुलिस सहायता उपलब्ध होने वाली जगह पर जाएँ। अपनी जान को प्राथमिकता दें।

2. आत्मरक्षा करें, बदला लेने के लिए नहीं आवश्यक और आनुपातिक बल का ही प्रयोग करें। हथियार उठाना, भीड़ इकट्ठा करके हमला करना आपके लिए ही कानूनी परेशानी बढ़ा सकता है।

3. तुरंत पुलिस से सहायता माँगेँ जान को खतरा हो तो 112 आपातकालीन नंबर पर कॉल करें। फोन संभव न हो तो आसपास के लोगों से मदद माँगेँ।

4. सबूत सुरक्षित रखें — लेकिन जान जोखिम में डालकर नहीं

- घटना का वीडियो या फोटो बनवाएँ
- CCTV कैमरों की जानकारी रखें
- प्रत्यक्षदर्शियों के नाम और संपर्क विवरण लें
- वाहन नंबर, घटना का समय और स्थान नोट करें
- चोट लगने पर अस्पताल जाएँ और मेडिकल रिकॉर्ड सुरक्षित रखें
- 5. पुलिस में शिकायत दर्ज कराएँ पुलिस

को घटना की पूरी जानकारी दें और FIR / शिकायत दर्ज कराने का अनुरोध करें। यदि सामने वाला व्यक्ति प्रभावशाली है, तब भी कानूनी सहायता लेने से पीछे न हटें।

6. अपने संगठन और परिवार को सूचित करें अपने परिवार, मलिक, ट्रांसपोर्टर या संगठन के जिम्मेदार पदाधिकारी को घटना की जानकारी दें, ताकि आवश्यकता पड़ने पर आपको सहायता मिल सके।

7. कानून अपने हाथ में न लें गुस्से में आकर बदला लेना, भीड़ इकट्ठा करके हमला करना या हथियार उठाना आपके लिए कानूनी और शारीरिक परेशानी बढ़ा सकता है। अपनी रक्षा करना आपका अधिकार है, लेकिन कानून के दायरे में रहकर।

न्यायिक आदेशों का दृष्टिकोण सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट कई आदेशों में यह सिद्धांत दोहरा चुके हैं कि:

- पुलिस का कर्तव्य है कि पीड़ित की शिकायत पर बिना देर किए कार्रवाई करें।
- मारपीट और धमकी भारतीय न्याय संहिता के तहत दंडनीय अपराध हैं।
- आत्मरक्षा में किया गया आनुपातिक बल अपराध नहीं है, बशर्ते वह खतरे को टालने तक सीमित हो।
- CCTV फुटेज और मेडिकल रिपोर्ट अदालत में महत्वपूर्ण साक्ष्य माने जाते हैं।

इसलिए ड्राइवर भाइयों से अनुरोध है — घटना के बाद तुरंत मेडिकल और पुलिस रिकॉर्ड बनवाएँ, यही आपके केस को

मजबूत करेगा।

हमारी तीन प्रमुख माँगें — सारथी एकता वाहन एसोसिएशन (S.E.V.A.)

✓ **1. राष्ट्रीय ड्राइवर सुरक्षा कानून**
ड्यूटी के दौरान ड्राइवरों पर हमला करने वालों के लिए कठोर दंड और त्वरित न्याय की व्यवस्था हो।

✓ **2. राष्ट्रीय ड्राइवर आयोग**
ड्राइवरों की शिकायतों के निपटारे के लिए स्वतंत्र आयोग बने, जैसा कि अन्य वर्गों के लिए है।

✓ **3. ड्राइवर वेलफेयर बोर्ड**
स्वास्थ्य बीमा, पेंशन, दुर्घटना सहायता और कल्याणकारी योजनाओं के लिए बोर्ड का गठन हो।

आंदोलन की घोषणा
12 नवंबर 2026 — स्टैयरिंग छोड़ो आंदोलन आइए, ड्राइवर समाज की सुरक्षा, सम्मान और अधिकारों के लिए एकजुट हों।

निष्कर्ष: जनहित में संदेश ड्राइवर कोई कमजोर इंसान नहीं है। वह देश का सारथी है। जब तक ड्राइवर सुरक्षित नहीं होगा, देश की आपूर्ति व्यवस्था सुरक्षित नहीं होगी। परिवहन विशेष की माँग है कि ड्राइवरों की सुरक्षा के लिए प्रभावी कानून बने, उनकी शिकायतों पर उचित कार्रवाई हो और ड्यूटी के दौरान उनकी जान-माल की रक्षा सुनिश्चित की जाए।

सेवा • सहयोग • विश्वास • विकास
जय हिंद • जय सारथी!
संपर्क: 8979606659 (केवल WhatsApp)

शारदीय नवरात्रि विशेष - संपादकीय शैली में

शारदीय नवरात्रों की हार्दिक शुभकामनाएं - चतुर्थ मां कूष्माण्डा देवी जिन्होंने अपनी मंद मुस्कान से रचा ब्रह्माण्ड, वो मां कूष्माण्डा

ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड | परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक टैपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) | ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन (पंजीकृत) के प्रमुख साझा प्रबंधन मंडल की ओर से आप सभी को शुभकामनाएं > मां की अनुपम ममता और कृपा सब पर बनी रहे यही कामना है हमारी।

संजय कुमार बाठला - प्रधान संपादक
| पिकी कुंडू - सह संपादक

1. मां कूष्माण्डा: नाम का अर्थ और स्वरूप नवरात्रि के चौथे दिन मां दुर्गा के कूष्माण्डा स्वरूप की पूजा होती है।

- कूष्माण्डा = कू + ऊष्मा + अण्डा - अर्थात् जिनकी मंद, हल्की मुस्कान से ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुई।

- जब सृष्टि में चारों ओर अंधकार था, तब मां ने अपनी ऊर्जा से ब्रह्माण्ड को प्रकाशित किया।

- मां अष्टभुजा हैं - आठ हाथों में कर्मडल, धनुष, बाण, कमल, अमृत कलश, चक्र, गदा और जपमाला धारण करती हैं।

- वाहन सिंह हैं, और मां का प्रिय भोग मालपुआ और कुम्हड़ा (पेटा) है।

- मां का रंग नारंगी/सुनहरा है, जो ऊर्जा, सूर्य और जीवन का प्रतीक है।

मां कूष्माण्डा को सूर्यमंडल की अधिष्ठात्री कहा जाता है। मां के तेज से ही सूर्यप्रकाशित होता है और सृष्टि में ऊर्जा का संचार होता है।

2. पूजाविधि - भक्तों के लिए
सामग्री: पीले/नारंगी फूल, अक्षत, रोली, चंदन, मालपुआ, फल, पान, सुगंध, धूप-दीप, कलश

विधि:

1. सुबह स्नान कर पीले वस्त्र धारण करें

2. मां की प्रतिमा/तस्वीर पर गंगाजल छिड़कें

3. कलश स्थापना कर दीप प्रज्ज्वलित करें

4. मां को मालपुआ और कुम्हड़े का भोग अर्पित करें



5. मंत्र जाप:

> ॐ देवी कूष्माण्डायै नमः ॥

> सुरासम्पूर्ण कलश संभारान्पुतमेव च।
दधाना हस्तपद्मान्मां कूष्माण्डा शुभदस्तु मे ॥

6. आरती कर प्रसाद वितरण करें
विशेष: इस दिन कन्याओं को भोजन कराना और ब्राह्मणों को दान देना अति फलदायी माना जाता है।

3. कथा: ब्रह्माण्ड की रचना पौराणिक कथा के अनुसार जब ब्रह्माण्ड नहीं था, चारों ओर शून्य और अंधकार था। तब मां भगवती ने अपनी मंद मुस्कान से ब्रह्माण्ड की रचना की। मां की इस मुस्कान से ही सूर्य, चंद्रमा, तारे और समस्त सृष्टि का निर्माण हुआ। इसलिए मां को आदिशक्ति और सृष्टि की जननी कहा जाता है।

मां की आराधना से भक्तों के रोग, शोक और दरिद्रता का नाश होता है। मां कूष्माण्डा

की कृपा से आयु, यश, बल और आरोग्य की प्राप्ति होती है।

4. मुख्य बिंदु - भक्तों के लिए
- तिथि: नवरात्रि का चतुर्थ दिवस
- देवी: मां कूष्माण्डा
- स्वरूप: अष्टभुजा, सिंहवाहिनी
- प्रिय भोग: मालपुआ, कुम्हड़ा
- प्रिय रंग: नारंगी, पीला
- मंत्र: ॐ देवी कूष्माण्डायै नमः
- फल: आरोग्य, आयु, यश, बल, समृद्धि

5. संपादकीय संदेश परिवहन विशेष परिवार की ओर से सभी पाठकों, ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स, चालकों, श्रमिकों और उनके परिवारों को शुभकामनाएं — मां कूष्माण्डा की कृपा से आपका जीवन प्रकाश, स्वास्थ्य और समृद्धि से भर जाए।

> मां की अनुपम ममता और आशीर्वाद आप पर सदा बना रहे।

टैपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
<https://tolwa.com/about.html> | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com



पिकी कुंडू

साइबर अपराध भौगोलिक सीमाओं, कानूनी अधिकार क्षेत्रों और पारंपरिक पुलिसिंग ढाँचों से परे जाकर होता है। हाल ही में सामने आया मामला — जिसमें एक इतालवी महिला ईस्टाग्राम पर मिले एक व्यक्ति के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने के लिए गुरुग्राम आए — यह दर्शाता है कि डिजिटल अपराध एक देश में शुरू होकर दूसरे देश के पीड़ित को निशाना बना सकता है और तीसरे देश में अभियोजन की आवश्यकता पैदा कर सकता है।

यह मामला सीमापार सहयोग, समान कानूनी ढाँचे, और तेज अंतरराष्ट्रीय समन्वय की आवश्यकता को रेखांकित करता है ताकि साइबर अपराधियों की प्रभावी जांच और अभियोजन हो सके।

मामले का सार: महाद्वीपों के पार रोमलस फ्रॉड पीड़ित प्रोफाइल
* **राष्ट्रीयता:** इतालवी डू आयु: 50 वर्ष डू पेशा: ज्वेलरी डिजाइनर, इटली के रीमियो एमिलिया में कई शोरूम की मालिक

आरोपी
* **राष्ट्रीयता:** भारतीय डू स्थान:

आज का साइबर सुरक्षा विचार: सीमा से परे: साइबर अपराध की कोई सीमा नहीं होती

गुरुग्राम डू कार्यप्रणाली: 0 ईस्टाग्राम पर बातचीत कर भरोसा बनाया 0 विवाह का वादा किया 0 भरोसा बढ़ाने के लिए AI जनित वीडियो भेजे 0 नौकरी खोजने का बहाना बनाकर 0 नौकरी के दो किश्तों में €900—€1,000 प्राप्त किए 0 पैसे मिलते ही संपर्क तोड़ दिया

पीड़ित की कार्रवाई
इटली में धीमी कार्रवाई से निराश होकर पीड़ित महिला भारत आई, ACP (साइबरक्राइम) गौरव फोगाट से मिली और गुरुग्राम साइबरक्राइम पुलिस स्टेशन में औपचारिक शिकायत दर्ज कराई। धारा 318(4) BNS के तहत FIR दर्ज की गई।

यह मामला अधिकार क्षेत्र की चुनौतियों को कैसे दर्शाता है

A. अपराध सीमाओं के पार डिजिटल रूप से हुआ

* बातचीत ईस्टाग्राम पर हुई डू घन का लेन-देन अंतरराष्ट्रीय (Western Union) डू आरोपी भारत में, पीड़ित इटली में डू साक्ष्य वैश्विक सर्वरों पर यह स्थिति कम से कम तीन कानूनी प्रणालियों को शामिल करती है — जिससे बहु-अधिकार क्षेत्रीय जटिलता पैदा होती है।

B. इटली में शिकायत में देरी
पीड़ित ने कहा कि इटली में उसकी शिकायत "लंबे समय तक लंबित रहती" क्योंकि दो सरकारी के बीच समन्वय आवश्यक है और ऐसे

साइबर फ्रॉड मामलों को कम महत्व दिया जाता है।

C. प्रत्यक्ष उपस्थिति की आवश्यकता

पीड़ित ने भारत आने में — फ्लाइट, वीजा, होटल आदि — अपनी हानि से दोगुना खर्च किया। यह दर्शाता है कि अधिकार क्षेत्र की खामियों का बोझ अक्सर पीड़ितों को उठाना पड़ता है।

गुरुग्राम पुलिस की जांच
A. त्वरित कार्रवाई
गुरुग्राम साइबर पुलिस ने तुरंत FIR दर्ज की और तकनीकी निगरानी व बैंक ट्रेल विश्लेषण शुरू किया।

B. डिजिटल साक्ष्य संग्रह
पुलिस ने ट्रेस किया: डू ईस्टाग्राम चैट डू बैंक विवरण डू डिजिटल फुटप्रिंट डू आरोपी का मोबाइल फोन

C. आरोपी की गिरफ्तारी
36 वर्षीय साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ अखिल मौर्य को €900 की धोखाधड़ी के आरोप में गिरफ्तार किया गया।

साइबर अपराध की कोई सीमा नहीं होती

A. डिजिटल अपराध भूगोल को नज़रअंदाज़ करते हैं
अपराधी लाभ उठाते हैं: डू वैश्विक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म डू अंतरराष्ट्रीय भुगतान प्रणालियाँ डू गुप्तता उपकरण डू कमजोर अंतरराष्ट्रीय समन्वय

B. पीड़ितों को न्याय के लिए सीमाएँ पात करनी पड़ती हैं

यह मामला दिखाता है कि पीड़ितों को: डू अंतरराष्ट्रीय यात्रा करनी पड़ सकती है डू विदेशी पुलिस से संपर्क करना पड़ सकता है डू अपरिचित कानूनी प्रणालियों से गुजरना पड़ सकता है

C. अंतरराष्ट्रीय सहयोग अनिवार्य है
प्रभावी अभियोजन के लिए आवश्यक: डू MLAT (Mutual Legal Assistance Treaties) डू इंटरपोल समन्वय डू सीमापार डिजिटल साक्ष्य साझा करना डू समान साइबर कानून

D. साइबर पुलिस को वैश्विक शिकायतें संभालनी होंगी

गुरुग्राम पुलिस ने स्पष्ट कहा कि वे भारत और विदेश — दोनों से आने वाली साइबर शिकायतों को गंभीरता से लेते हैं। यह अंतरराष्ट्रीय उन्मुख साइबर पुलिसिंग इकाइयों की आवश्यकता को दर्शाता है।

भारत के लिए नीति संबंधी संकेत

A. सीमापार साइबर अपराध प्रोटोकॉल को मजबूत करना

भारत को विकसित करना चाहिए: डू तेज MLAT प्रक्रिया डू अंतरराष्ट्रीय साइबर संपर्क अधिकारी डू वास्तविक समय डिजिटल साक्ष्य विनिमय तंत्र

B. विदेशी नागरिकों के लिए पीड़ित सहायता बढ़ाना
पुलिस स्टेशनों को: डू बहुभाषी सहायता प्रदान करनी चाहिए डू

विदेशी पीड़ितों के लिए डिजिटल शिकायत सुविधा देनी चाहिए डू दूतावासों से समन्वय करना चाहिए

C. भारतीय साइबर पुलिसिंग में वैश्विक विश्वास बनाना

यह मामला दर्शाता है: डू गुरुग्राम साइबर पुलिस की पेशेवर क्षमता डू अंतरराष्ट्रीय साइबर अपराध संभालने में भारत की योग्यता डू पारदर्शी और पीड़ित-अनुकूल प्रक्रियाओं का महत्व

इतालवी महिला का मामला यह स्पष्ट करता है कि साइबर अपराध सीमाओं, अधिकार क्षेत्रों और पारंपरिक पुलिसिंग ढाँचों से परे है। यह वास्तविकता को उजागर करता है:

साइबर अपराध की कोई सीमा नहीं होती — लेकिन अभियोजन की होती है।

इस अंतर को पाटने के लिए देशों को सीमापार सहयोग मजबूत करना होगा, डिजिटल साक्ष्य साझा करने को सरल बनाना होगा, और साइबर पुलिस इकाइयों को वैश्विक डिजिटल परिस्थितिकी तंत्र में सहजता से काम करने में सक्षम बनाना होगा।

यह मामला भारत की अंतरराष्ट्रीय साइबर अपराध प्रतिक्रिया क्षमता को भी उजागर करता है — दिखाता है कि सक्रिय पुलिसिंग अधिकार क्षेत्र की बाधाओं को पार कर सकती है और महाद्वीपों के पार भी न्याय दिला सकती है।

परिवहन विशेष समाचार पत्र से जुड़े सभी पाठकों और सहयोगियों के लिए विशेष सूचना

परिवहन विशेष समाचार पत्र को जिस तरह आप लोगों के सहयोग लगातार पिछले 3 वर्षों से प्राप्त हुआ और प्रतिदिन आपकी आवाज को आगे पड़ाने में आपका सहयोगी बना उसी को देखते हुए परिवहन विशेष समाचार पत्र के प्रबंधक मंडल और ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड कंपनी द्वारा जनहित, जनकल्याण जनसुचना और जानकारी को और तेजी से भारत सरकार और राज्य सरकारों के साथ सभी राजनीतिक संगठनों को सबसे पहले पहुंचाने के उद्देश्य से अक्टूबर माह से जनता की आवाज का अपना चैनल "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" शुरू करने का निर्णय लिया है।

जल्द आपके बीच में....



परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन

बड़ी खुशखबरी! अब आपकी आवाज गुंजेगी पूरी दुनिया में
परिवहन विशेष समाचार पत्र के सफल 3 वर्षों के बाद अब नई क्रांति



संजय बाठला
मुख्य संपादक

आशा करते हैं की हम अपने चैनल के माध्यम से आपको 1. प्रतिदिन की देश विदेश की जानकारी 2. आपके वह आपके बच्चों के कैरियर, 3. आपके बच्चों के भविष्य से संबंधित जानकारी 4. आपकी सेहत से जुड़ी सभी उपयोगी जानकारी 5. शारीरिक बीमारियों से बचने के तरीके 6. धार्मिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान विश्व के सभी क्षेत्रों के जानदताओं के माध्यम से प्रदान करने का प्रयास करेंगे। हम अपने चैनल द्वारा प्रतिदिन एक घंटे के कार्यक्रम "जनता की पुकार" में आपकी आवाज को विश्व के सामने प्रस्तुत कर सरकार और सरकारों के साथ माननीय न्यायालयों से उसके उचित हल और उसके प्रति पालिसी लागू करवाने में मध्यंतर का माध्यम बनेंगे। आप सभी से अनुरोध आप के अपने शुरू होने वाले चैनल के माध्यम से अपनी शिकायतें, पेशानियां और अनुभव अन्य सभी से साझा करने के लिए तैयार एवं तयार रहे। आशा करते हैं जैसे आपने आज के इस दौर को "परिवहन विशेष समाचार पत्रों" को इतना आगे ले कर जाने में सहयोग दिया उसी प्रकार हमारे द्वारा आपकी आवाज बनने के लिए शुरू किए जा रहे "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" को विश्व का सबसे बड़ा चैनल बनवाएंगे।

सेवा संकल्प अभियान-2026 : ग्रामीणों के लिए लाभकारी साबित हो रहे सेवा सेतु कैंप

सरकार की योजनाओं के लाभार्थी बनने सेवा सेतु कैंप पहुंचे ग्रामीण गांव खुड्डन में उमेद आर्य,पूर्व सरपंच दिनेश और मोनू ने सेवा सेतु कैम्प का किया अवलोकन

डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में विभिन्न विभागों ने स्टॉल लगाकर दी योजनाओं की जानकारी

झज्जर, 13 अक्टूबर

सेवा संकल्प अभियान के तहत नागरिकों को सरकारी सेवाओं एवं जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ सहज रूप से उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से मंगलवार को गांव खुड्डन में सेवा सेतु कैंप का आयोजन हुआ । बीडीपीओ धर्मपाल, उमेद आर्य, पूर्व सरपंच दिनेश और मोनू सहित अन्य गणमान्य ने सेवा सेतु कैम्प का अवलोकन किया ।

कैम्प में बड़ी संख्या में क्षेत्रवासियों ने



पहुंचकर विभिन्न विभागों की योजनाओं एवं सेवाओं की जानकारी प्राप्त की और उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उठाया । डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में झज्जर जिला में सेवा संकल्प अभियान के तहत सेवा सेतु कैंप लगाकर लोगों को लाभान्वित किया जा रहा है ।



योजनाओं के लिए निर्धारित पात्रता, आवेदन प्रक्रिया तथा मिलने वाले लाभों के बारे में भी विस्तार से बताया गया । कैंप में पहुंचने वाले लोगों की समस्याओं एवं जिज्ञासाओं का मौके पर समाधान करने का प्रयास किया गया ।

सेवा सेतु कैंप में स्वास्थ्य एवं आयुष



विभाग की ओर से स्वास्थ्य जांच शिविर भी लगाया गया । यहां नागरिकों की स्वास्थ्य जांच करने के साथ उन्हें स्वास्थ्य संरक्षण, स्वस्थ जीवनशैली तथा आयुष पद्धति से संबंधित आवश्यक जानकारी एवं परामर्श दिया गया । इससे कैंप में आने वाले नागरिकों को सरकारी

योजनाओं की जानकारी के साथ स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं का भी लाभ मिला ।

कैंप में विभिन्न योजनाओं से संबंधित जानकारी लेने के लिए नागरिकों में उत्साह देखने को मिला । लोगों ने विभागीय स्टॉल पर पहुंचकर अपनी

जरूरत के अनुसार जानकारी प्राप्त की तथा पात्रता के आधार पर योजनाओं का लाभ लेने के लिए आवश्यक प्रक्रिया को समझा । अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने आमजन को सरकार की योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया ।

प्रदूषण फैलाने वालों पर प्रशासन का शिकंजा, दिन-रात हो रही निगरानी : डीसी



कूड़ा, पराली और प्लास्टिक वेस्ट जलाने वालों पर होगी सख्त कार्रवाई

डीसी वर्षा खांगवाल के निर्देश, एसडीएम और बीडीपीओ करेंगे निगरानी, लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों की तय होगी जवाबदेही

झज्जर, 13 अक्टूबर। एनसीआर क्षेत्र में वायु प्रदूषण पर नियंत्रण और पर्यावरण संरक्षण को लेकर झज्जर जिला प्रशासन ने सख्ती बढ़ा दी है । डीसी वर्षा खांगवाल ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि जिला में प्रदूषण फैलाने वाली गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए दिन-रात निगरानी की जाए । खुले में कूड़ा-कचरा, पराली और प्लास्टिक वेस्ट जलाने वालों के खिलाफ नियमानुसार सख्त कार्रवाई सुनिश्चित की जाए ।

डीसी ने कहा कि प्रदूषण नियंत्रण के लिए गठित टीमें दिन और रात सक्रिय रहें तथा शिकायत मिलने पर तुरंत कार्रवाई करें । सड़कों, खाली प्लॉटों और अन्य खुले स्थानों पर कचरा जलाने की घटनाओं पर विशेष नजर रखी जाए । साथ ही, सड़कों पर धूल-मिट्टी उड़ने से

रोकने के लिए प्रभावी उपाय किए जाएं और संभावित प्रदूषण प्रभावित क्षेत्रों में नियमित निरीक्षण किया जाए । उन्होंने सभी बीडीपीओ को पंचायती भूमि पर कचरा डालने, जलाने या अन्य तरीके से प्रदूषण फैलाने वालों के खिलाफ कार्रवाई करने के निर्देश दिए । डीसी ने सभी एसडीएम को अपने-अपने क्षेत्रों में प्रदूषण नियंत्रण उपायों की नियमित समीक्षा करने और संबंधित विभागों के साथ समन्वय बनाए रखने को कहा । डीसी वर्षा खांगवाल ने स्पष्ट किया कि प्रदूषण नियंत्रण में लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों की जवाबदेही तय होगी । उन्होंने आमजन से कूड़ा-कचरा, पराली और प्लास्टिक वेस्ट नहीं जलाने तथा स्वच्छ एवं प्रदूषण मुक्त वातावरण बनाए रखने में प्रशासन का सहयोग करने की अपील की ।

चिन्हित अपराधों, नशा तस्करी और साइबर फ्रॉड पर प्रभावी कार्रवाई करें अधिकारी : डीसी



केमिस्ट शॉप पर सीसीटीवी कैमरे अनिवार्य रूप से पूरी दुकान को करें कवर, फुटेज का कम से कम तीन माह का बैकअप रखने के निर्देश

झज्जर, 13 अक्टूबर

डीसी वर्षा खांगवाल ने जिला में कानून व्यवस्था को मजबूत बनाने और अपराधों पर प्रभावी अंकुश लगाने के उद्देश्य से चिन्हित अपराध, नारकोट तथा साइबर फ्रॉड से संबंधित मामलों की समीक्षा बैठक ली । बैठक में डीसीपी फैजल खान विशेष रूप से उपस्थित थे ।

डीसी वर्षा खांगवाल ने अधिकारियों को अपराधों की रोकथाम, मामलों की प्रभावी जांच तथा आपसी समन्वय के साथ कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए । डीसी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि नशे से संबंधित

गतिविधियों पर निगरानी मजबूत रखी जाए और नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाए । उन्होंने कहा कि अपराध नियंत्रण के लिए नियमित निगरानी, प्रभावी कार्रवाई और विभागीय समन्वय बेहद जरूरी है ।

केमिस्ट शॉप पर सीसीटीवी कैमरों की व्यवस्था दुरुस्त रखने के निर्देश

डीसी वर्षा खांगवाल ने केमिस्ट दुकानों पर सीसीटीवी निगरानी व्यवस्था को प्रभावी बनाए रखने के निर्देश देते हुए कहा कि कैमरे इस प्रकार लगाए जाएं कि पूरी दुकान कवर हो । सीसीटीवी फुटेज का कम से कम तीन माह का बैकअप सुरक्षित रखा जाए, ताकि आवश्यकता पड़ने पर रिकॉर्डिंग उपलब्ध हो सके । उन्होंने संबंधित टीम को केमिस्ट दुकानों का

नियमित निरीक्षण करने के निर्देश दिए । निरीक्षण के दौरान सीसीटीवी कैमरों की कार्यशील स्थिति, पूरी दुकान में उनकी कवरेज और फुटेज के बैकअप की जांच की जाए । जहां भी कमियां पाई जाएं, वहां नियमानुसार आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित की जाए । साथ ही नशीली दवाओं की उपलब्धता की भी चेकिंग करने के निर्देश दिए गए ।

डीसी ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी संबंधित मामलों की नियमित मॉनिटरिंग की जाए और निर्धारित दिशा-निर्देशों की पालना सुनिश्चित करते हुए जिला में अपराध नियंत्रण के लिए गंभीरता से कार्य किया जाए ।

इस अवसर पर एसडीएम झज्जर रवि मीणा, एसडीएम बादली विशाल सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे ।

युवा विकास की नई दिशा तय करने वाले शिल्पकार : दिनेश शेखावत

मातृहेल स्थित राजकीय कॉलेज में ‘सेवा फर्स्ट इनोवेशन चैलेंज’ के तहत कार्यशाला आयोजित

झज्जर, 13 अक्टूबर

जिलाभर में 17 अक्टूबर तक डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में चल रहे सेवा संकल्प अभियान को निरन्तर बढ़ावा मिल रहा है, इसी कड़ी में मंगलवार को मातृहेल स्थित राजकीय कॉलेज में ‘सेवा संकल्प अभियान’ के तहत ‘सेवा फर्स्ट इनोवेशन चैलेंज’ विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई ।

कार्यक्रम में जिला संयोजक दिनेश शेखावत ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करते हुए विद्यार्थियों को नवाचार, रचनात्मक सोच और उद्यमिता के माध्यम से विकसित भारत के निर्माण में योगदान देने के लिए प्रेरित किया । उन्होंने कहा कि युवा देश का भविष्य ही नहीं, बल्कि विकास की नई दिशा तय करने वाले शिल्पकार भी हैं । युवाओं की प्रतिभा और तकनीकी ज्ञान का सही उपयोग समाज से जुड़ी समस्याओं के समाधान में किया जाना चाहिए ।

नौकरी तलाशने वाले नहीं, रोजगार सृजन का माध्यम बनें युवा पीढ़ी



जिला संयोजक दिनेश शेखावत ने कहा कि देश की प्रगति केवल डिग्री हासिल करने से नहीं, बल्कि नए विचारों और प्रभावी समाधानों को विकसित करने से होगी । आज के युवाओं को नौकरी तलाशने के साथ-साथ रोजगार सृजन बनने की दिशा में भी आगे बढ़ना चाहिए । उन्होंने विद्यार्थियों को आधुनिक कृषि, सौर ऊर्जा, जल संरक्षण, पराली एवं कचरा प्रबंधन और साइबर सुरक्षा जैसे विषयों पर नए विचार विकसित करने के लिए प्रेरित किया । उन्होंने कहा कि जब युवा अपनी तकनीकी समझ और रचनात्मक सोच से किसी सामाजिक

समस्या का समाधान तलाशते हैं, तो यही प्रयास आगे चलकर स्टार्टअप और उद्यमिता का आधार बनते हैं ।

श्रेष्ठनवाचारी विचारों को मिलेगा प्रोत्साहन

जिला संयोजक ने विद्यार्थियों को ‘सेवा फर्स्ट इनोवेशन चैलेंज’ की रूपरेखा को जानकारी देते हुए कहा कि युवाओं के नवाचारी विचारों को आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न स्तरों पर प्रोत्साहन और तकनीकी सहयोग के अवसर उपलब्ध हैं । उन्होंने विद्यार्थियों से अपने बेहतर आइडिया को आधिकारिक पोर्टल पर पंजीकृत करवाने और इस पहल का अधिक से

अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया । कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ सुशील दलाल ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया और विद्यार्थियों से अपनी रचनात्मक ऊर्जा को नवाचार से जोड़ने की अपील की ।

सरकारी योजनाओं से स्वरोजगार को दें नई उड़ान

कार्यशाला में जिला उद्योग केंद्र के उद्योग विस्तार अधिकारी नीरज सिंह ने विद्यार्थियों को स्वरोजगार, स्टार्टअप और उद्यमिता से संबंधित विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी दी । उन्होंने प्रधानमंत्री मुद्रा

योजना, स्मिस्डी प्रावधान, क्रेडिट गारंटी योजना और इनक्यूबेशन सपोर्ट सहित युवाओं के लिए उपलब्ध सुविधाओं के बारे में विस्तार से बताया । मंच संचालन श्रीओम ने किया ।

चेरहे मौजूद

इस अवसर पर अनिल शर्मा, डॉ श्रीओम, डॉ प्रियंका, प्रो अजय राठी, प्रो वीरेन्द्र यादव, प्रो सोनू रानी, प्रो सिवानी, डॉ ओमपति, डॉ राकेश, डॉ बलराम, प्रो कपिल गुप्ता, प्रो नरेश गोयल सहित महाविद्यालय के समस्त स्टाफ सदस्य और विद्यार्थी उपस्थित रहे

प्रदूषण फैलाने वालों पर प्रशासन का शिकंजा, दिन-रात हो रही निगरानी : डीसी

झज्जर, 13 अक्टूबर। एनसीआर क्षेत्र में वायु प्रदूषण पर नियंत्रण और पर्यावरण संरक्षण को लेकर झज्जर जिला प्रशासन ने सख्ती बढ़ा दी है । डीसी वर्षा खांगवाल ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि जिला में प्रदूषण फैलाने वाली गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए दिन-रात निगरानी की जाए । खुले में कूड़ा-कचरा, पराली और प्लास्टिक वेस्ट जलाने वालों के खिलाफ नियमानुसार सख्त कार्रवाई सुनिश्चित की जाए ।

डीसी ने कहा कि प्रदूषण नियंत्रण के लिए गठित टीमें दिन और रात सक्रिय रहें तथा शिकायत मिलने पर तुरंत कार्रवाई करें । सड़कों, खाली प्लॉटों और अन्य खुले स्थानों पर कचरा जलाने की घटनाओं पर विशेष नजर रखी जाए । साथ ही, सड़कों पर धूल-मिट्टी उड़ने से रोकने के लिए प्रभावी उपाय किए जाएं और संभावित प्रदूषण प्रभावित क्षेत्रों में नियमित निरीक्षण किया जाए ।

उन्होंने सभी बीडीपीओ को पंचायती भूमि पर कचरा डालने, जलाने या अन्य तरीके से प्रदूषण फैलाने वालों के खिलाफ कार्रवाई करने के निर्देश दिए । डीसी ने सभी एसडीएम को अपने-अपने क्षेत्रों में प्रदूषण नियंत्रण उपायों की नियमित समीक्षा करने और संबंधित विभागों के साथ समन्वय बनाए रखने को कहा ।

डीसी वर्षा खांगवाल ने स्पष्ट किया कि प्रदूषण नियंत्रण में लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों की जवाबदेही तय होगी । उन्होंने आमजन से कूड़ा-कचरा, पराली और प्लास्टिक वेस्ट नहीं जलाने तथा स्वच्छ एवं प्रदूषण मुक्त वातावरण बनाए रखने में प्रशासन का सहयोग करने की अपील की ।



झज्जर, 13 अक्टूबर। एनसीआर क्षेत्र में वायु प्रदूषण पर नियंत्रण और पर्यावरण संरक्षण को लेकर झज्जर जिला प्रशासन ने सख्ती बढ़ा दी है । डीसी वर्षा खांगवाल ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि जिला में प्रदूषण फैलाने वाली गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए दिन-रात निगरानी की जाए । खुले में कूड़ा-कचरा, पराली और प्लास्टिक वेस्ट जलाने वालों के खिलाफ नियमानुसार सख्त कार्रवाई सुनिश्चित की जाए ।

डीसी ने कहा कि प्रदूषण नियंत्रण के लिए गठित टीमें दिन और रात सक्रिय रहें तथा शिकायत मिलने पर तुरंत कार्रवाई करें । सड़कों, खाली प्लॉटों और अन्य खुले स्थानों पर कचरा जलाने की घटनाओं पर विशेष नजर रखी जाए । साथ ही, सड़कों पर धूल-मिट्टी उड़ने से रोकने के लिए प्रभावी उपाय किए जाएं और संभावित प्रदूषण प्रभावित क्षेत्रों में नियमित निरीक्षण किया जाए । उन्होंने सभी बीडीपीओ को पंचायती भूमि पर कचरा डालने, जलाने या अन्य तरीके से प्रदूषण फैलाने वालों के खिलाफ कार्रवाई करने के निर्देश दिए । डीसी ने सभी एसडीएम को अपने-अपने क्षेत्रों में प्रदूषण नियंत्रण उपायों की नियमित समीक्षा करने और संबंधित विभागों के साथ समन्वय बनाए रखने को कहा ।

जेन ज़ेड के आक्रोश से सत्ता के गलियारों में खलबली ! जेन ज़ेड बनाम सत्ता का समीकरण: क्या जेन ज़ेड बनेगा 2027 का किंगमेकर ? जंतर-मंतर से प्रदर्शन स्थल हटाने के फैसले ने छेड़ी नई बहस - क्या 2027 में युवा लिखेंगे चुनावी इतिहास ?

जेन जेड बनाम सत्ता का समीकरण: क्या जेन जेड बनेगा 2027 का किंगमेकर ?

जंतर-मंतर से प्रदर्शन स्थल हटाने के फैसले ने छेड़ी नई बहस – क्या 2027 में युवा लिखेंगे चुनावी इतिहास ?

लेखक: सनमुखदास मण्डल

एडवोकेट भावनानी, गोंदिया (महाराष्ट्र)

1. भूमिका: 12 अक्टूबर 2026 - एक दर्शनीय घटना 12 अक्टूबर 2026 का दिन भारतीय राजनीति में युवा असंतोष, चुनावी पारदर्शिता और लोकतांत्रिक संस्थाओं की भूमिका को लेकर एक बड़े सवाल के साथ सामने आया ।

उसी दिन तीन घटनाएं एक साथ हुईं:

1. दिल्ली में मुख्य निर्वाचन आयुक्त के इस्तीफे की मांग

2. विपक्षी नेताओं का सुप्रीम कोर्ट की ओर मार्च

3. जंतर-मंतर को निर्धारित प्रदर्शन स्थलों की सूची से हटाने का आदेश

क्या यह संयोग है या संकेत ? यही सवाल आज सत्ता के गलियारों में खलबली गवा रहा है ।

2. जंतर-मंतर: रोक नहीं, बदलाव – लेकिन सवाल अनेक दिल्ली पुलिस ने 11 अक्टूबर 2026 के आदेश से जंतर-मंतर को आधिकारिक प्रदर्शन स्थलों की सूची से हटाना और उसके स्थान पर तीन नए स्थान तय किए - राजतीला मैदान, बुराड़ी मैदान और पूर्वी दिल्ली का सीबीडी ब्रांड्स ।

इस आदेश ने 28 अप्रैल 2022 के पुराने स्थायी आदेश में आंशिक संशोधन किया । प्रशासन का तर्क है - नई गंगाजल की समिति की सिफारिश, नई प्रबंधन और वैधानिक व्यवस्था ।

लेकिन जंतर-मंतर सिर्फ एक सड़क नहीं है । यह देशकों से देश के अंतर्गत का प्रतीक है । यहां से 370 आवाज संसद तक सीधे पहुंचती थी । अब सवाल यह है:

> क्या नए स्थान शांतिपूर्ण विरोध के अधिकार को समान व्यवहार प्रकट करेंगे, या आवाज को राजधानी के केंद्र से दूर धकेल देंगे ?

यह कला का सवाल है इकर यह फैसला लिया, तथ्यों से सिद्ध नहीं होता । लेकिन इसका न्यायिक इस बात से होगा कि नए स्थलों पर प्रदर्शनकारियों को कितनी सुविधा मिलती है ।

3. जेन जेड का आक्रोश और एनडीए की कश्मकश विरोध का केंद्र सिर्फ जंतर-मंतर नहीं, बल्कि चुनावी विधिसमन्वयता है । विशेष गहन मतदाता सूची पुनरीक्षण (SAR) के दौरान बड़े पैमाने पर नाम हटाने जाने के आरोपों ने युवा समूहों को आक्रोशित किया है ।

- विपक्ष का पक्ष: यह बताधिकार और निष्पक्षता का संवात है ।

- निर्वाचन आयोग का पक्ष: सूची की शुद्धता और प्रक्रिया का पालन हुआ है ।

एनडीए के नेतृत्व में संकेत अलग-अलग हैं । धियाग पासवान युवाओं के सवाल सुनने की बात कर रहे हैं,

जबकि जितन नाम रॉजी केंद्र के समर्थन में खड़े हैं । यह गवर्नेशन में संकेत का प्रमाण नहीं है, लेकिन यह संकेत जरूर है कि युवा अब किसी भी दल की अनदेखी बर्बर नहीं करेंगे ।

युवा चाहते हैं – रोजगार, भर्ती परीक्षा की निष्पक्षता, शिक्षा, मलगाई पर नियंत्रण और जवाबदेही ।

4. बांग्लादेश और नेपाल: जब युवा सड़कें सत्ता बदल देती हैं भारत के जेन जेड को समझने के लिए पड़ोस की दो घटनाएं महत्वपूर्ण हैं:

- बांग्लादेश, अगस्त 2024: सरकारी नौकरियों में आरक्षण के विरोध से युवा दूध छात्र प्रोटेक्शन व्यापक सरकार विरोधी संघर्ष में बदल गया । 15 अगस्त 2024 को प्रधानमंत्री शेख हसीना को इस्तीफा देकर देश छोड़ना पड़ा । सात के शासन का अंत हो गया ।

- नेपाल, सितंबर 2025: भद्राबाद, बेरोजगारी और असमानता के खिलाफ युवा प्रदर्शन । सोशल मीडिया पर प्रतिबंध ने आग में घी डाला । प्रधानमंत्री को इस्तीफा देना पड़ा ।

भारत अलग है: यहां निर्माण चुनाव, बहुतीय लोकतंत्र और व्यापक समीक्षा है । लेकिन संदेश स्पष्ट है – युवाओं को केवल चुनाव के समय यह करना काफी नहीं है ।

5. सुप्रीम कोर्ट की ओर मार्च: लोकतंत्र की परीक्षा 12 अक्टूबर को विपक्षी नेताओं का सुप्रीम कोर्ट की ओर मार्च एक संवैधानिक बहस बन गया । C.J. सुप्रीम कोर्ट ने प्रतिनिधिमंडल से मिलने से इनकार किया और व्यापकालिका को राजनीतिक विवाद में न खींचने की बात कही ।

यहां अंतर समझना जरूरी है:

- किसी संस्था की आलोचना करना और कानूनी राह मांगना लोकतांत्रिक है ।
- व्यापकालिका पर किसी विरोध राजनीतिक निष्कर्ष के लिए दबाव बनाना अलग बात है ।

विपक्ष को प्रमाण और दस्तावेज के साथ आरोप सिद्ध करने होंगे । आयोग को पारदर्शी और न्याय होगा ।

6. 2027 का चुनावी गणित: क्या युवा बढ़ते होंगे खेत ? 2027 में सात राज्यों में विधानसभा चुनाव होने की संभावना है – उत्तर प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, गोवा,

गणिपुर, गुजरात और झारखण्ड प्रदेश । सबसे बड़ा अखाड़ा उत्तर प्रदेश होगा – 403 सीटें । यहां जेन जेड मतदाताओं की हिस्सेदारी करीब 15 प्रतिशत गनी जा रहे हैं । 2027 में 99 सीटों पर जंतर-मंतर का अंतर 10,000 से कम था (आधिकारिक परिणामों से सत्यापित योग्य) ।

अगर यह आंकड़ा सही है, तो युवा वोट करीबी सीटों पर निर्णायक साबित हो सकता है ।

लेकिन सावधानी: केवल युवा आवादी का आकार जित गुणिस्थित नहीं करता । उनकी प्राथमिकताएं वेतन, कर्म और स्थानीय उम्मीदवारों के अनुसार अलग होंगी । जेन जेड किसी एक दल की संपत्ति नहीं है ।

7. निष्कर्ष: सरकार का इस या लोकतंत्र की परीक्षा ? जंतर-मंतर का नाम सूची से हटाना अपने आप में इर का प्रमाण नहीं है । लेकिन यह लोकतंत्र की अंशपरिशील जरूरत है ।

असली सवाल ये हैं:

- क्या प्रशासनिक फैसले विरोध के अधिकार को सीमित

कर रहे हैं ?

- क्या चुनावी प्रक्रिया पर उठे सवालों का पारदर्शी जवाब मिल रहा है ?
- क्या दल युवाओं को सत्ता संघर्ष के वक्ते से देख रहे हैं या उनकी शिकायतों को सुन रहे हैं ?
- जेन जेड 2027 का किंगमेकर बन सकता है – अगर उसे सुना गया, तो वह लोकतंत्र को मजबूत करेगा, अगर उसे दबाया गया, तो इतिहास गवाह है, युवा सड़क से सत्ता बदल देते हैं ।

मुख्य बिंदु:

- जंतर-मंतर स्थल बदलाव: जंतर-मंतर हटाना, 3 नए स्थल तय
- SAR विवाद: मतदाता सूची से नाम हटाने पर विपक्ष का विरोध
- बांग्लादेश-नेपाल सबक: युवा असंतोष सत्ता परिवर्तन का कारण बना
- 2027 चुनाव: 7 राज्यों में चुनाव, UP निर्णायक
- युवा भूरे: रोजगार, भर्ती निष्पक्षता, शिक्षा, मलगाई

दिल की भाषा समझने में महिलाएं अधिक कुशल?



● डॉ. विजय गर्ग

समझना संचार केवल बोले गए शब्दों तक सीमित नहीं है। चेहरे के भाव, आंखों का संपर्क, आवाज का उतार-चढ़ाव, शारीरिक मुद्रा और मौन भी उन भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं जिन्हें शब्दों में बताना कठिन होता है। कोई व्यक्ति कह सकता है, “मैं ठीक हूँ”, लेकिन उसका चेहरा उदासी या उसकी आवाज निराशा प्रकट कर सकती है। बोले गए शब्दों और वास्तविक भावनाओं के बीच इस अंतर को पहचानने के लिए ध्यान, अवलोकन और सहानुभूति की आवश्यकता होती है।



मानवीय भावनाएँ हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। खुशी, दुख, भय, स्नेह, क्रोध और करुणा हमारे संबंधों, निर्णयों और व्यवहार को प्रभावित करते हैं। लेकिन सभी लोगों की भावनाओं को पहचानने, अनकहे एहसासों को समझने और दूसरों की जरूरतों के प्रति संवेदनशील रहने की क्षमता एक जैसी नहीं होती। आम धारणा है कि महिलाएं पुरुषों की तुलना में दिल की भाषा को बेहतर समझती हैं। लेकिन क्या यह अंतर जैविक कारणों से उत्पन्न होता है, सामाजिक अनुभवों से विकसित होता है या इन दोनों का मिला-जुला परिणाम है? मनोविज्ञान इस प्रश्न पर रोचक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। शोध बताते हैं कि औसतन महिलाएं भावनाओं को पहचानने के कुछ परीक्षणों में पुरुषों से बेहतर प्रदर्शन कर सकती हैं, विशेषकर चेहरे के भावों और गैर-मौखिक संकेतों को समझने में। हालांकि, ये औसत अंतर हैं, सार्वभौमिक नियम नहीं। अनेक पुरुष भावनात्मक रूप से अत्यंत संवेदनशील होते हैं, जबकि कुछ महिलाओं को भी दूसरों की भावनाओं को समझने में कठिनाई हो सकती है।

शब्दों से परे भावनाओं को समझना

संचार केवल बोले गए शब्दों तक सीमित नहीं है। चेहरे के भाव, आंखों का संपर्क, आवाज का उतार-चढ़ाव, शारीरिक मुद्रा और मौन भी उन भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं जिन्हें शब्दों में बताना कठिन होता है। कोई व्यक्ति कह सकता है, “मैं ठीक हूँ”, लेकिन उसका चेहरा उदासी या उसकी आवाज निराशा प्रकट कर सकती है। बोले गए शब्दों और वास्तविक भावनाओं के बीच इस अंतर को पहचानने के लिए ध्यान, अवलोकन और सहानुभूति

की आवश्यकता होती है। कुछ महिलाएं ऐसे सूक्ष्म संकेतों पर विशेष ध्यान देती दिखाई देती हैं। वे परिवार के किसी सदस्य के व्यवहार में बदलाव पहचान सकती हैं, बातचीत में तनाव महसूस कर सकती हैं या समझ सकती हैं कि किसी मित्र को भावनात्मक सहारे की जरूरत है। ऐसी क्षमताएं संबंधों को मजबूत बनाते और गलतफहमियों को दूर करने में सहायक हो सकती हैं। लेकिन भावनात्मक संकेतों की व्याख्या हमेशा आसान नहीं होती। चुप्पी का अर्थ उदासी, थकान, नाराजगी या केवल कुछ समय अकेले रहने की इच्छा भी हो सकता है। बिना पूछे यह मान लेना कि हम किसी दूसरे व्यक्ति की भावनाओं को पूरी तरह समझते हैं, गलतफहमी पैदा कर सकता है। इसलिए संवेदनशीलता के साथ खुला संवाद भी आवश्यक है।

विज्ञान क्या कहता है?

भावनात्मक बुद्धिमत्ता में अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने तथा नियंत्रित करने की क्षमता शामिल होती है। शोधकर्ता इन क्षमताओं का अध्ययन चेहरे के भावों को पहचानने वाले परीक्षणों, प्रश्नावलियों और भावनात्मक समझ के विभिन्न आकलनों के माध्यम से करते हैं। कई अध्ययनों में पाया गया है कि कुछ प्रकार की भावनात्मक अभिव्यक्तियों को पहचानने और गैर-मौखिक संकेतों से भावनाओं का अनुमान लगाने में महिलाओं को औसतन थोड़ी बढ़त मिल सकती है। कुछ सामाजिक परिस्थितियों में महिलाएं भावनात्मक बारीकियों पर अधिक ध्यान भी दे सकती हैं। फिर भी, निष्कर्ष परीक्षण के प्रकार, आयु, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि



महिलाएं अक्सर परिवारों में अवैतनिक भावनात्मक जिम्मेदारियों का बड़ा हिस्सा भी निभाती हैं। वे जन्मदिन याद रखती हैं, रिश्तेदारों की परेशानी पहचानती हैं, विवादों को सुलझाने में मदद करती हैं और कठिन समय में भावनात्मक सहारा देती हैं। लगातार ऐसी जिम्मेदारियां निभाने से उनकी व्यावहारिक भावनात्मक समझ विकसित हो सकती है। हालांकि, जब इस योगदान को स्वाभाविक मानकर नजरअंदाज किया जाता है, तो यह मानसिक थकान का कारण भी बन सकता है। ये सामाजिक परिस्थितियां हर परिवार और समाज में एक जैसी नहीं होतीं। मुख्य बात यह है कि भावनात्मक कौशल केवल व्यक्तिगत विशेषताओं से नहीं, बल्कि समाज द्वारा दिए जाने वाले अवसरों और अपेक्षाओं से भी प्रभावित होते हैं।

सहानुभूति: सभी के लिए उपयोगी गुण

सहानुभूति हमें अपनी दृष्टि से आगे बढ़कर यह समझने में मदद करती है कि दूसरा व्यक्ति क्या अनुभव कर रहा होगा। परिवार, मित्रता, कार्यस्थल, कक्षाओं और स्वास्थ्य सेवाओं में इसका विशेष महत्व है।

धैर्यपूर्वक सुनने वाला माता-पिता बच्चे को सुरक्षित महसूस करा सकता है। किसी विश्वार्थी की चिंता पहचानने वाला शिक्षक उसका आत्मविश्वास लौटाने में मदद कर सकता है। मरीज के डर को समझने वाला डॉक्टर अधिक प्रभावी संवाद कर सकता है। कर्मचारियों की बात सुनने वाला प्रबंधक छोटे मतभेदों को गंभीर विवाद बनने से रोक सकता है।

बननी चाहिए कि उनकी अपनी भावनाओं को नजरअंदाज किया जाए या उन पर असীमित जिम्मेदारियां डाल दी जाएं। स्वस्थ रिश्तों में आपसी समझ जरूरी है। इन अनुभवों को व्यक्त करना और स्वस्थ सीमाएं निर्धारित करना भी शामिल है।

निष्कर्ष: दिल की भाषा का कोई लिंग नहीं होता

क्या महिलाएं दिल की भाषा समझने में अधिक कुशल हैं? वैज्ञानिक शोध संकेत देते हैं कि कुछ प्रकार की भावनाओं को पहचानने और गैर-मौखिक संकेतों के प्रति संवेदनशीलता में महिलाओं को औसतन थोड़ी बढ़त मिल सकती है। सामाजिक अनुभव और सांस्कृतिक अपेक्षाएं भी इन अंतरों में योगदान दे सकती हैं। फिर भी, भावनात्मक समझ को केवल महिलाओं का गुण मानना उचित नहीं है। दूसरों की भावनाओं को समझने की क्षमता अवलोकन, अनुभव, संवाद और सचेत प्रयास से विकसित होती है। कुछ लोग इसे कम उम्र में सीख लेते हैं, जबकि दूसरे इसे धीरे-धीरे विकसित करते हैं। सबसे महत्वपूर्ण है ध्यानपूर्वक सुनने की इच्छा, भावनाओं को स्वीकार करने का साहस और यह समझ कि दूसरे व्यक्ति की आंतरिक दुनिया हमसे अलग हो सकती है।

तकनीक, प्रतिस्पर्धा और जटिलबाजी से भरी दुनिया में भावनात्मक समझ पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। बुद्धिमत्ता हमें मदद करती है, लेकिन सहानुभूति हमें यह समझने में सहायता देती है कि मनुष्यों के लिए कौन-सी समस्याएं वास्तव में महत्वपूर्ण हैं।

दिल की भाषा न तो केवल महिलाओं की है और न ही पुरुषों की। यह उन सभी की भाषा है, जो धैर्य से सुनने, करुणा से समझने और दयालुता से प्रतिक्रिया देने के लिए तैयार हैं।

डॉ. विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्राचार्य | प्रख्यात वैज्ञानिक
स्ट्रीट कौर चंद, मलोत,
पंजाब – 152107

गाँव की पुस्तकालयों और कहानी सुनाने की कला: हर बच्चे के लिए प्रारंभिक शिक्षा के नए द्वार

डॉ. विजय गर्ग बच्चे की शिक्षा की यात्रा स्कूल के पहले दिन या पाठ्यपुस्तक के पहले पाठ से शुरू नहीं होती। यह उससे बहुत पहले शुरू हो जाती है—जिज्ञासा, कल्पनाशक्ति, बातचीत और कहानियाँ सुनने के आनंद के साथ। पढ़ना सीखने से पहले बच्चों को सुनने, प्रश्न पूछने, नए विचारों को जानने और भाषा से प्रेम करने के अवसर मिलने चाहिए। गाँवों की पुस्तकालयों और कहानी सुनाने के सत्र बच्चों में सीखने की इन शुरुआती क्षमताओं को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। विशेष रूप से उन बच्चों के लिए इनका महत्व अधिक है, जिनके पास पुस्तकें और शैक्षिक संसाधन सीमित हैं।

अक्षरों से पहले कहानियाँ

छोटे बच्चों के लिए कहानियाँ केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं। वे नए शब्द सिखाती हैं, सुनने की क्षमता विकसित करती हैं, स्मरणशक्ति मजबूत बनाती हैं और कल्पनाशक्ति को प्रोत्साहित करती हैं। जब दादा-दादी कोई पारंपरिक कहानी सुनाते हैं, शिक्षक चित्रों वाली पुस्तक पढ़कर सुनाता है या कोई स्वयंसेवक जानवरों की कहानी सुनाता है, तो बच्चे भाषा की दुनिया को समझना शुरू कर देते हैं।

वे सीखते हैं कि शब्दों के अर्थ होते हैं, कहानी के पात्र चुनौतियों का सामना करते हैं और समस्याओं के अलग-अलग समाधान हो सकते हैं। कहानियाँ बच्चों को दया, ईमानदारी, साहस, सहयोग और दूसरों का सम्मान करने जैसे मानवीय मूल्यों से भी परिचित कराती हैं।

जो बच्चा कहानियाँ सुनने का आनंद लेता है, उसमें पुस्तकों के प्रति रुचि विकसित होने की संभावना बढ़ जाती है। धीरे-धीरे यही रुचि अक्षरों को पहचानने, शब्दों को समझने और स्वतंत्र रूप से पढ़ने की आदत में बदल सकती है। इस प्रकार, औपचारिक शिक्षा शुरू होने से पहले ही कहानी सुनना साक्षरता की नींव तैयार

करता है।

गाँव की पुस्तकालयें: छोटे स्थान, बड़ी संभावनाएँ

गाँव में पुस्तकालय स्थापित करने के लिए भयं भवन, महँगा फर्नीचर या हजारों पुस्तकों की आवश्यकता नहीं होती। एक साफ कमरा, कुछ अलमारियाँ, रंग-बिरंगी चित्र-पुस्तकें, बैठने के लिए चटाईयाँ और एक स्नेही स्वयंसेवक बच्चों के लिए सीखने का आकर्षक वातावरण तैयार कर सकते हैं।

ऐसी पुस्तकालयें स्कूलों, सामुदायिक केंद्रों, पंचायत भवनों या अन्य सुव्यवस्थित पर स्थापित की जा सकती हैं। स्थानीय शिक्षक, सेवानिवृत्त शिक्षाविद, कॉलेज के विद्यार्थी और सामाजिक स्वयंसेवक इनके संचालन में सहयोग कर सकते हैं।

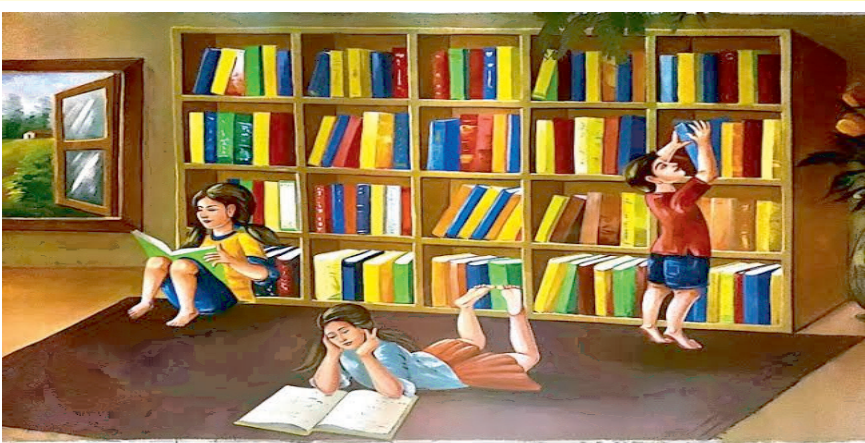
गाँव की पुस्तकालयों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसमें उपलब्ध पुस्तकों की संख्या नहीं, बल्कि बच्चों को मिलने वाले सीखने के अवसर हैं। बच्चों को अपनी पसंद की पुस्तकें चुनने, चित्र देखने, प्रश्न पूछने, कहानियों पर चर्चा करने और सीखी हुई बातें साझा करने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।

स्थानीय भाषाओं में पुस्तकें उपलब्ध होना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। जब बच्चे अपनी परिचित भाषा में कहानियाँ सुनते हैं, तो वे नए विचारों को अपने अनुभवों से जोड़ पाते हैं। पंजाबी, हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की पुस्तकें पढ़ने को सहज बनाती हैं। दूसरी ओर, कुछ बच्चों के घरों में पुस्तकें कम होती हैं और उनके माता-पिता के पास बच्चों की पढ़ाई में सहायता करने के लिए पर्याप्त समय या आत्मविश्वास नहीं होता। ये अंतर बच्चों के शुरुआती भाषाई विकास और औपचारिक शिक्षा के लिए उनकी तैयारी को प्रभावित कर सकते हैं। गाँव की पुस्तकालय प्रत्येक बच्चे को उसकी पारिवारिक आर्थिक स्थिति से परे पुस्तकें और सार्थक संवाद के अवसर देकर इस अंतर को कम करने में सहायता कर सकती है।

प्रारंभिक साक्षरता की खाई को कम करना

सभी बच्चे समान अवसरों के साथ स्कूल नहीं पहुँचते। कुछ बच्चे ऐसे घरों में बड़े होते हैं जहाँ पुस्तकें उपलब्ध होती हैं और कहानियों पर नियमित बातचीत होती है। दूसरी ओर, कुछ बच्चों के घरों में पुस्तकें कम होती हैं और उनके माता-पिता के पास बच्चों की पढ़ाई में सहायता करने के लिए पर्याप्त समय या आत्मविश्वास नहीं होता। ये अंतर बच्चों के शुरुआती भाषाई विकास और औपचारिक शिक्षा के लिए उनकी तैयारी को प्रभावित कर सकते हैं। गाँव की पुस्तकालय प्रत्येक बच्चे को उसकी पारिवारिक आर्थिक स्थिति से परे पुस्तकें और सार्थक संवाद के अवसर देकर इस अंतर को कम करने में सहायता कर सकती है।

कहानी को शुरू से अंत तक केवल



लेकिन केवल पुस्तकालय खोल देना पर्याप्त नहीं है। बच्चों को वहाँ नियमित रूप से आने और गतिविधियों में भाग लेने के अवसर मिलने चाहिए। साप्ताहिक कहानी सत्र, चित्र-पुस्तकों से जुड़ी गतिविधियाँ, कठपुतली कार्यक्रम, सामूहिक पठन और कहानी-साझाकरण के आयोजन पुस्तकालयों को सक्रिय शिक्षण केंद्र बना सकते हैं।

माता-पिता को घर पर भी बच्चों को कहानियाँ सुनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इसके लिए महँगी पुस्तकों या उच्च शैक्षिक योग्यता की आवश्यकता नहीं है। वे अपने बचपन की यादें, लोककथाएँ, प्रकृति से जुड़ी घटनाएँ या काल्पनिक रोमांचक कहानियाँ सुना सकते हैं। बच्चों को अपने शब्दों में कहानी दोहराने के लिए कहना उनकी भाषाई क्षमता और आत्मविश्वास बढ़ा सकता है।

कहानियों को स्थानीय जीवन से जोड़ना

गाँव की पुस्तकालयों का एक विशेष लाभ यह है कि वे सीखने को बच्चों के आसपास के जीवन से जोड़ सकती हैं। खेती, पशु-पक्षियों, नदियाँ, झरुआँ, गाँव के बाजारों और स्थानीय त्योहारों पर आधारित कहानियाँ बच्चों को पुस्तकों में अपने जीवन की झलक दिखाती हैं।

गाँव के बुजुर्ग लोककथाएँ, पारंपरिक ज्ञान और समुदाय के इतिहास से जुड़ी बातें साझा कर सकते हैं। बच्चे अपने दादा-दादी का साक्षात्कार ले सकते हैं, पारिवारिक कहानियाँ दर्ज कर सकते हैं या अपने गाँव के बारे में चित्रों वाली छोटी पुस्तकें बना सकते हैं। ऐसी गतिविधियाँ सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखने में मदद करती हैं।

इसके साथ ही, पुस्तकालयों में विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों को कहानियों में उपलब्ध होनी चाहिए। इससे बच्चे समझते हैं कि लोगों की जीवनशैली अलग-अलग हो सकती है, लेकिन उनकी भावनाओं, आशाओं और मूल्यों में अनेक समानताएँ होती हैं।

जंगलों के बारे में कहानी पढ़ने वाला बच्चा प्रकृति में रुचि लेने लग सकता है। किसी वैज्ञानिक की कहानी सुनने वाला बच्चा ब्रह्माण्ड के बारे में प्रश्न पूछना शुरू कर सकता है। इस प्रकार कहानियाँ विज्ञान, गणित, इतिहास और सामाजिक मूल्यों की शिक्षा का प्रारंभिक आधार बन सकती हैं।

प्रत्येक बच्चे के लिए स्वागतपूर्ण वातावरण

एक प्रभावी गाँव की पुस्तकालय में सभी बच्चों का स्वागत होना चाहिए। इसमें

दिव्यांग बच्चे, वंचित परिवारों के बच्चे और पढ़ने में कठिनाई महसूस करने वाले बच्चे भी शामिल हैं। बड़े अक्षरों वाली पुस्तकें, स्पष्ट चित्र, ऑडियो कहानियाँ और सुगम पठन-स्थल अधिक बच्चों को भागीदारी का अवसर दे सकते हैं।

लड़कियों और लड़कों को अपनी पसंद की पुस्तकें चुनने, चर्चा में बोलने और कहानी सुनाने की गतिविधियों का नेतृत्व करने के समान अवसर मिलने चाहिए। किसी बच्चे को इसलिए शर्मिंदा नहीं करना चाहिए कि वह कोई शिक्का केवल अक्षरों को पहचानने और वाक्य पढ़ने की क्षमता का नाम नहीं है। यह सोचने, कल्पना करने, संवाद करने और दुनिया को समझने की क्षमता भी है। गाँव की पुस्तकालयों में सहायता देने वाले बच्चों में इन योग्यताओं को औपचारिक कक्षाओं में प्रवेश करने से बहुत पहले विकसित करने हैं।

रंग-बिरंगी चित्र-पुस्तक, परिचित लोककथा या दस मिनेट का कहानी-पठन सत्र एक छोटी-सी शुरुआत लग सकता है। लेकिन ऐसे अनुभव बच्चों में जिज्ञासा जगा सकते हैं, आत्मविश्वास बढ़ा सकते हैं और जीवनभर सीखते रहने की आदत विकसित कर सकते हैं।

यदि प्रत्येक गाँव में ऐसी स्वागतपूर्ण जगह बनाई जाए, जहाँ बच्चे कहानियाँ सुन सकें, पुस्तकों की दुनिया में घूम सकें और बिना किसी डर के अपने विचार व्यक्त कर सकें, तो साक्षरता की ओर बढ़ने वाली यात्रा अधिक आनंदमय और समावेशी बन सकती है।

पढ़ने की ओर बढ़ते बच्चे का पहला कदम शायद वर्णमाला का पाठ नहीं, बल्कि प्यार से सुनाई गई कोई कहानी हो। जब समुदाय आज कहानियाँ और पुस्तकों में निवेश करता है, तो वह प्रत्येक बच्चे के लिए शिक्षा, अवसर और उज्ज्वल भविष्य के द्वार खोलने में योगदान देता है।

ट्रांसपोर्ट कारोबार की चुनौतियों पर मंथन, सेवा शुल्क दोगुना करने का निर्णय

गारंटी शुल्क के भुगतान और वजन में गड़बड़ी का मुद्दा उठा; व्यवसाय में पारदर्शिता, अनुशासन और आपसी समन्वय पर जोर

रिपोर्ट ड़ा राजकुमार यादव
परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला।

वेदव्यास स्थित बजरंगबली कॉम्प्लेक्स परिसर में राउरकेला गुड्स ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में परिवहन व्यवसाय से जुड़ी समस्याओं, बढ़ती परिचालन लागत और व्यापारिक लेन-देन में आ रही व्यावहारिक कठिनाइयों पर विस्तार से चर्चा हुई। सदस्यों ने अपनी समस्याएं संस्था के अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव के समक्ष रखीं और उनके समाधान के लिए सामूहिक निर्णय लिए गए।

बैठक में प्रमुख रूप से पिछले 15 वर्षों से सेवा शुल्क में बढ़ोतरी नहीं होने का मुद्दा उठाया गया। सदस्यों का कहना था कि लंबे समय से शुल्क में संशोधन नहीं होने के कारण मौजूदा कारोबारी परिस्थितियों में परिवहन कार्य का आर्थिक संतुलन बनाए



रखना चुनौतीपूर्ण हो रहा है। विचार-विमर्श के बाद सेवा शुल्क को 50 रुपये से बढ़ाकर 100 रुपये प्रति टन करने का निर्णय लिया गया।

इसके अलावा, व्यापारियों द्वारा परिवहन संस्थाओं को गारंटी शुल्क का भुगतान नहीं किए जाने की समस्या पर भी गंभीर चर्चा हुई। इस संबंध में सभी संबंधित व्यापारियों को सूचित कर निर्धारित शुल्क के भुगतान के लिए प्रेरित करने का निर्णय लिया गया। आसपास के औद्योगिक प्रतिष्ठानों में माल के वजन में कथित गड़बड़ी की शिकायतों को भी प्रमुखता से उठाया गया। सदस्यों ने इस विषय में पारदर्शिता और सही वजन सुनिश्चित करने

की आवश्यकता पर बल दिया।

बैठक में यह प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से पारित किया गया कि 20 प्रतिशत से अधिक अग्रिम भुगतान की स्थिति में दो प्रतिशत शुल्क लागू किया जाएगा। इसका उद्देश्य व्यापारिक लेन-देन में स्पष्टता और निर्धारित नियमों के अनुरूप कार्यप्रणाली विकसित करना है।

वर्तमान समय में परिवहन क्षेत्र ईंधन की कीमतों, वाहन रखरखाव, टोल शुल्क, चालक-कर्मचारियों के खर्च, भुगतान में देरी और माल ढुलाई की प्रतिस्पर्धी दरों जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसे में परिवहनकर्ताओं के लिए लागत के अनुरूप पारिश्रमिक, समयबद्ध भुगतान और उद्योगों

के साथ बेहतर समन्वय महत्वपूर्ण हो गया है। अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने सदस्यों से आपसी सहयोग, अनुशासित कार्यप्रणाली और पेशेवर दृष्टिकोण अपनाने की अपील की। उन्होंने कहा कि संगठन की मजबूती सामूहिक एकजुटता और समस्याओं के व्यावहारिक समाधान में निहित है।

बैठक में वरिष्ठ सदस्य राम मेहर शर्मा, दिलीप अग्रवाल, नंद किशोर सिंह, शंकर लाल शर्मा, चंदन बेहरा, रामाज्ञा प्रसाद सिंह, गोविन्द अग्रवाल, श्याम प्रसाद सहित रंजन बेहरा, प्रशांत पाणी, मुनौड़ सिंह, जगन्नाथ पंडा, राजेश जेथलिया तथा अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

छात्र सीखें आपदा प्रबंधन कौशल: प्रधानाचार्य बलविंदरपाल

अंतरराष्ट्रीय आपदा जोखिम न्यूनीकरण दिवस पर अलीवाल, बटाला में जागरूकता कार्यक्रम — आपात स्थिति में घबराना नहीं, तैयार रहना सीखें

— प्रधान संपादक: संजय कुमार बाठला, परिवहन विशेष — बटाला, पंजाब

भूमिका: जागरूकता ही सुरक्षा है

बटाला के पीएम श्री गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल, अलीवाल में अंतरराष्ट्रीय आपदा जोखिम न्यूनीकरण दिवस के अवसर पर एक विशेष प्रातःकालीन सभा का आयोजन किया गया। स्कूल के प्रधानाचार्य बलविंदरपाल के नेतृत्व में यह कार्यक्रम छात्रों और शिक्षकों को आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूक करने के लिए आयोजित हुआ। कार्यक्रम में वीटी मंगल सिंह, डीएम हरबखश सिंह और मनिंदर कोर भी उपस्थित रहे।

मुख्य तथ्य: कार्यक्रम का विवरण
विद्यालय: PM Shri Govt. Senior Secondary School, Aliwal, Batala
आयोजन: अंतरराष्ट्रीय आपदा जोखिम न्यूनीकरण दिवस पर मॉनिंग असेंबली
अध्यक्षता: प्रधानाचार्य

बलविंदरपाल उपस्थित: VT मंगल सिंह, DM हरबखश सिंह, मनिंदर कोर, समस्त शिक्षक और विद्यार्थी

उद्देश्य: आपदा की पहचान, बचाव और तैयारी की जानकारी देना

विन्दु 1: कितने प्रकार की आपदाएं? — छात्रों को दी गई पूरी जानकारी कार्यक्रम में छात्रों को विभिन्न प्रकार की आपदाओं के बारे में बताया गया:

- जल-संबंधी और पर्यावरणीय आपदाएं: बाढ़, सूखा, जलवायु परिवर्तन
 - भूगर्भीय आपदाएं: भूकंप, भूस्खलन, ज्वालामुखी
 - रासायनिक और औद्योगिक आपदाएं: गैस रिसाव, औद्योगिक दुर्घटना
 - परमाणु आपातकाल: परमाणु रिसाव और सुरक्षा
 - दुर्घटना-संबंधी आपदाएं: सड़क दुर्घटना, आग, इमारत गिरना
 - जैविक आपदाएं: महामारी, बीमारियों का फैलाव
- हर प्रकार की आपदा में क्या करना है और क्या नहीं करना है, इसकी विस्तार से जानकारी दी गई।
- विन्दु 2: Do's and Don'ts — आपात स्थिति में क्या करें, क्या न करें?
- क्या करें (Do's):
 - शांत रहें, घबरारें नहीं
 - तुरंत 112 पर मदद के लिए संपर्क करें



- सुरक्षित स्थान पर जाएं और एकत्र हों
- शिक्षकों के निर्देश का पालन करें
- प्राथमिक उपचार और अग्निशमन डिल में सक्रिय भाग लें
- क्या न करें (Don'ts):
- अफवाह न फैलाएं, केवल अधिकारिक सूचना पर भरोसा करें
- डरकर भागें नहीं, अनुशासन बनाए रखें
- क्षतिग्रस्त या कमजोर भवन में प्रवेश न करें
- बिजली और गैस लाइन को न छेड़ें

विन्दु 3: व्यावहारिक अभ्यास — किताब से आगे, मैदान में सीख केवल भाषण से नहीं, बल्कि व्यावहारिक अभ्यास (Practical Drill) के माध्यम से छात्रों को अप्रत्याशित घटनाओं और आपदाओं के दौरान प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया करने के लिए तैयार किया गया।

छात्रों ने भूकंपनिकासी अभ्यास, सुरक्षित निकास मार्ग, आग बुझाने का डेमो, प्राथमिक उपचार और घायल को सुरक्षित उठाने का अभ्यास किया। कार्यक्रम में जोर दिया गया कि

आपदा प्रबंधन जागरूकता और तैयारी से कीमती जीवन और संपत्ति की हानि को कम किया जा सकता है।

विन्दु 4: AI के दुरुपयोग से बचें — छात्राओं के लिए विशेष जागरूकता कार्यक्रम के अंत में छात्राओं को AI के दुरुपयोग से बचने के लिए भी जागरूक किया गया।

डीपफेक, फर्जी संदेश, ऑनलाइन धोखाधड़ी, सुरक्षित पासवर्ड और सोशल मीडिया सुरक्षा के टिप्स दिए गए। संदिग्ध लिंक या संदेश की पहचान और साइबर हेल्पलाइन 1930 के बारे में बताया गया।

निष्कर्ष: जनहित में संदेश प्रधानाचार्य बलविंदरपाल ने कहा कि छात्र सीखें आपदा प्रबंधन कौशल, क्योंकि आज का छात्र ही कल का जिम्मेदार नागरिक है। शिक्षा के साथ सुरक्षा — यही सुरक्षित भविष्य की गारंटी है।

परिवहन विशेष का संदेश है — हर स्कूल में आपदा प्रबंधन की ट्रेनिंग हो, हर बच्चा जानले कि संकट में क्या करना है। जागरूकता ही सबसे बड़ी सुरक्षा है।

सुरक्षा - जागरूकता - तैयारी

दिनदहाड़े जंगल की जमीन पर खनन का आरोप; चालक और अन्य लोग फरार, वर्षों से कथित अवैध कारोबार पर कार्रवाई में देरी को लेकर उठे सवाल

रिपोर्ट ड़ा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला:

सुंदरगढ़ जिले के राउरकेला स्थित जलदा क्षेत्र में जंगल की जमीन से कथित तौर पर अवैध रूप से पत्थर निकालकर कारोबार चलाय जाने का मामला सामने आया है। स्थानीय स्तर पर लंबे समय से शिकायतों के बावजूद प्रभावी कार्रवाई नहीं होने के आरोपों के बीच वन विभाग की टीम ने छापेमारी कर एक जेसीबी मशीन और सात ट्रैक्टर जब्त किए। कार्रवाई के दौरान वन चालकों सहित अन्य लोग मौके से फरार हो गए।

मामले ने वनभूमि की सुरक्षा, सरकारी राजस्व की संभावित क्षति और संबंधित विभागों की निगरानी व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। यदि जंगल की जमीन पर लंबे समय से बिना वैध अनुमति पत्थर का



उत्खनन होता रहा, तो यह जांच का विषय है कि आखिर जिम्मेदार अधिकारियों को इसकी जानकारी क्यों नहीं मिली और शिकायतों पर समय रहते कार्रवाई क्यों नहीं हुई।

सवाल सिर्फ मशीनों जब्त करने का नहीं, बल्कि पूरे नेटवर्क तक पहुंचने का है। पत्थर निकालने, परिवहन करने और बाजार में बेचने की प्रक्रिया में मौन-कौन शामिल था,

इसकी निष्पक्ष जांच जरूरी है। साथ ही, खनन की अवधि, निकाले गए पत्थरों की मात्रा, संभावित राजस्व नुकसान और वनभूमि को हुए नुकसान का आकलन किया जाना चाहिए।

सरकार की वन संरक्षण और अवैध खनन रोकने की नीतियां तभी प्रभावी मानी जाएंगी, जब उनका क्रियान्वयन जमीन पर दिखाई दे।

केवल छापेमारी और वाहन जब्ती पर्याप्त नहीं; दोषियों की पहचान, कानूनी कार्रवाई और क्षतिग्रस्त भूमि के पुनर्वास की दिशा में भी ठोस कदम उठाने होंगे।

अब देखना होगा कि वन विभाग, खनन विभाग और जिला प्रशासन इस मामले को अंजाम तक पहुंचाते हैं या कार्रवाई जब्त मशीनों तक ही सीमित रह जाती है।

नवरात्रि में ध्यान से जाग्रत होती है देवी शक्ति, आत्मिक शुद्धि के लिए साधना जरूरी - वर्षा प्रधान

वर्षा प्रधान ने शिवपुर में आयोजित आध्यात्मिक चर्चा में देहरी पूजन, कलश स्थापना, दुर्गा सप्तशती और शरीर की तीन नाड़ियों के महत्व पर डाला प्रकाश

(संतोष कुमार सिंह)

वाराणसी :- नवरात्रि का पर्व केवल पूजा-पाठ, व्रत और धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है बल्कि यह आत्मिक शुद्धि, सकारात्मक ऊर्जा और अंतर्मन की शक्ति को जाग्रत करने का भी महत्वपूर्ण अवसर है ध्यान के माध्यम से व्यक्ति अपने भीतर की आध्यात्मिक चेतना को अनुभव कर सकता है। यह विचार शिवपुर स्थित निवास पर आयोजित विशेष आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक चर्चा के दौरान मोटिवेशनल स्पीकर, मेडिटेशन ट्रेनर एवं काउंसलर वर्षा प्रधान ने व्यक्त किए। उन्होंने उपस्थित लोगों और मीडिया प्रतिनिधियों के विभिन्न सवालों के जवाब देते हुए नवरात्रि की परंपराओं, देहरी पूजन, कलश स्थापना, दुर्गा सप्तशती में वर्णित देवी स्वरूपों तथा ध्यान के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। चर्चा के दौरान वर्षा प्रधान ने कहा कि वर्तमान समय में लोग भागदौड़ भरी जिंदगी के कारण कई पारंपरिक धार्मिक मान्यताओं और पूजा-पद्धतियों के महत्व को भूलते जा रहे हैं। नवरात्रि जैसे पावन अवसर पर इन परंपराओं को समझना और उनके आध्यात्मिक महत्व को आत्मसात करना आवश्यक है।

देहरी पूजन से होता है मां का स्वागत



देहरी पूजन के महत्व पर चर्चा करते हुए वर्षा प्रधान ने बताया कि घर की देहरी के केवल प्रवेश द्वार नहीं, बल्कि भारतीय परंपरा में इसे शुभता और मंगल आगमन का प्रतीक माना गया है। नवरात्रि के प्रथम दिन देहरी पूजन करके मां दुर्गा के स्वागत की परंपरा है उन्होंने बताया कि इसके लिए जल में गुलाब जल मिलाकर दहलीज को स्पष्ट किया जा सकता है। इसके बाद दालचीनी, हल्दी, कुमकुम और चावल का उपयोग करते हुए विधि-विधान से पूजन कर मां दुर्गा का स्मरण करना चाहिए। इस परंपरा का उद्देश्य घर में पवित्रता, सकारात्मकता और भक्तिभाव का वातावरण बनाना है।

श्रीगणेश का स्मरण करते हुए पूजा करने की विधि बताई उन्होंने कहा कि पूजा-पाठ का उद्देश्य मन में श्रद्धा, शांति और सकारात्मकता का भाव विकसित करना है।

दुर्गा सप्तशती में वर्णित देवी स्वरूपों पर चर्चा

दुर्गा सप्तशती के कवच पाठ में शरीर के विभिन्न अंगों की रक्षा से संबंधित देवी स्वरूपों के उल्लेख पर पूछे गए प्रश्नों के जवाब में वर्षा प्रधान ने त्वचा संबंधी समस्याओं के संदर्भ में बागेकवी देवी तथा हृदय की रक्षा के संदर्भ में ललिता देवी की उपासना का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि भारतीय धार्मिक परंपराओं में देवी के विभिन्न स्वरूपों के माध्यम से जीवन, स्वास्थ्य, सुरक्षा और कल्याण की कामना की जाती है।

शरीर की तीन नाड़ियों और त्रिगुणात्मिका शक्ति का संबंध

चर्चा में शरीर की तीन नाड़ियों और देवी शक्तियों के संबंध का विषय भी प्रमुखता से उठा। इस पर वर्षा प्रधान ने आध्यात्मिक मान्यताओं के संदर्भ में बताया कि इड़ा, पिण्डा और सुषुम्ना नाड़ियों को क्रमशः महाकाली, मां सरस्वती और महालक्ष्मी की शक्तियों से जोड़ा जाता है..

6 राज्यों में नए राज्यपालों की नियुक्ति, राष्ट्रपति द्वारा आदेश जारी

12 अक्टूबर 2026 को राष्ट्रपति भवन से अधिसूचना जारी – सिक्किम से केरलम और केरलम से तमिलनाडु तबादला, चार नए चेहरों को मौका

परिवहन विशेष ब्यूरो

देश के संघीय ढांचे में एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक फेरबदल करते हुए राष्ट्रपति द्वारा 12 अक्टूबर 2026 को 6 राज्यों में नए राज्यपालों की नियुक्ति एवं तबादले को मंजूरी दी गई है। राष्ट्रपति भवन की ओर से जारी विज्ञप्ति के अनुसार सभी नियुक्तियां संबंधित राज्यपालों द्वारा पदभार ग्रहण करने की तिथि से प्रभावी होंगी।

नई नियुक्तियों का विवरण:

- ◆ **केरल** — श्री ओम प्रकाश माथुर

अनुभवी राजनेता और वर्तमान में सिक्किम के राज्यपाल रहे श्री ओम प्रकाश माथुर जी का तबादला केरलम किया गया है। सार्वजनिक सेवा में कई दशकों का अनुभव रखने वाले माथुर जी को संगठनात्मक क्षमता के लिए जाना जाता है।

- ◆ **तमिलनाडु** — श्री राजेंद्र विष्वनाथ आलेंकर

केरलम के राज्यपाल रहे श्री राजेंद्र विश्वनाथ आलेंकर जी को अब तमिलनाडु का नया राज्यपाल नियुक्त किया गया है। पूर्व विधानसभा अध्यक्ष के रूप में विधायी कार्यों में उनका विशाल अनुभव है।

- ◆ **ओडिशा** — श्री ब्रज मोहन राम

श्री ब्रज मोहन राम जी को ओडिशा का नया राज्यपाल नियुक्त

किया गया है। सामाजिक सेवा एवं जनकल्याण कार्यों में सक्रिय योगदान के लिए पहचाने जाते हैं।

- ◆ **कर्नाटक** — डॉ. सुधा यादव

डॉ. सुधा यादव जी को कर्नाटक की नई राज्यपाल नियुक्त किया गया है। शिक्षा, स्वास्थ्य एवं महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में उनका उल्लेखनीय कार्य रहा है।

- ◆ **उत्तराखंड** — डॉ. ढाल सिंह बिसेन

डॉ. ढाल सिंह बिसेन जी को उत्तराखंड का नया राज्यपाल बनाया गया है। पर्यावरण संरक्षण एवं ग्रामीण विकास के विशेषज्ञ माने जाते हैं।

- ◆ **सिक्किम** — श्री दुष्यंत गौतम

पूर्व सांसद और संगठन के सशक्त नेता श्री दुष्यंत गौतम जी को सिक्किम का नया राज्यपाल नियुक्त किया गया है। युवा नेतृत्व और संगठनात्मक कौशल के लिए जाने जाते हैं।

मुख्य बिंदु:

- यह नियुक्तियां राष्ट्रपति के आदेशानुसार 12 अक्टूबर 2026 से प्रभावी मानी गई हैं।
- दो राज्यपालों का तबादला और चार नए चेहरों की नियुक्ति।
- सभी नियुक्त राज्यपाल जल्द ही अपने-अपने राज्यों में शपथ ग्रहण करेंगे।
- राष्ट्रपति ने 12 अक्टूबर को 6 राज्यों में तबादले और नई नियुक्तियों को दी मंजूरी
- राष्ट्रपति भवन द्वारा एक बड़ा प्रशासनिक निर्णय लेते हुए देश के 6 राज्यों में नए राज्यपालों की नियुक्ति और तबादले के आदेश जारी किए गए हैं। यह आदेश 12 अक्टूबर 2026 को राष्ट्रपति द्वारा अनुमोदित किया गया। सभी नियुक्तियां संबंधित राज्यपालों द्वारा पदभार ग्रहण करने की तिथि से प्रभावी मानी जाएंगी।
- तथ्य और विवरण:**
 - तबादले वाले दो नाम:
 - श्री ओम प्रकाश माथुर जी (सिक्किम से केरलम) : वर्तमान में सिक्किम के राज्यपाल रहे अनुभवी नेता श्री ओम प्रकाश माथुर जी को अब केरलम का नया राज्यपाल नियुक्त किया गया है। वे संगठनात्मक अनुभव और सार्वजनिक जीवन में दशकों के योगदान के लिए जाने जाते हैं।
 - श्री राजेंद्र विश्वनाथ आलेंकर जी (केरलम से तमिलनाडु) : केरलम से निवर्तमान राज्यपाल श्री आलेंकर जी को अब तमिलनाडु की जिम्मेदारी सौंपी गई है। पूर्व विधानसभा अध्यक्ष और वरिष्ठ राजनेता के रूप में उनका कार्यकाल उल्लेखनीय रहा है।
 - चार नई नियुक्तियां:
 - ओडिशा - श्री ब्रज मोहन राम जी: सामाजिक न्याय और जनजातीय कल्याण के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका।
 - कर्नाटक - डॉ. सुधा यादव जी: शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र की जानी-मानी शख्सियत।
 - उत्तराखंड - डॉ. ढाल सिंह बिसेन जी: कृषि, पर्यावरण और ग्रामीण विकास के विशेषज्ञ।
 - सिक्किम - श्री दुष्यंत गौतम जी: पूर्व सांसद और दलित समाज के सशक्त नेतृत्व के प्रतीक, युवा

परिवहन विशेष - Parivahan Vishesh

दिल्ली | दिल्ली संस्करण | अक्टूबर 2026

6 राज्यों में नए राज्यपालों की नियुक्ति, राष्ट्रपति द्वारा आदेश जारी

12 अक्टूबर 2026 को आदेश - केरल, तमिलनाडु, ओडिशा, कर्नाटक, उत्तराखंड, सिक्किम में नए राज्यपाल

श्री ओम प्रकाश माथुर जी

केरलम

श्री राजेंद्र विश्वनाथ आलेंकर जी

तमिलनाडु

श्री ब्रज मोहन राम जी

ओडिशा

डॉ. सुधा यादव जी

कर्नाटक

डॉ. ढाल सिंह बिसेन जी

उत्तराखंड

श्री दुष्यंत गौतम जी

सिक्किम

मुख्य विवरण - Key Details:

- केरल — श्री ओम प्रकाश माथुर जी को केरल का नया राज्यपाल नियुक्त किया गया। अपूर्व रचनात्मक, सार्वजनिक सेवा में कई दशकों का अनुभव।
- तमिलनाडु — श्री राजेंद्र विश्वनाथ आलेंकर जी को तमिलनाडु का नया राज्यपाल नियुक्त किया गया। पूर्व विधानसभा अध्यक्ष, विवेक कर्म में विशाल अनुभव।
- ओडिशा — श्री ब्रज मोहन राम जी को ओडिशा का नया राज्यपाल नियुक्त किया गया। सामाजिक सेवा एवं जनकल्याण कार्यों में सक्रिय नेतृत्व।
- कर्नाटक — डॉ. सुधा यादव जी को कर्नाटक का नया राज्यपाल नियुक्त किया गया। शिक्षा, स्वास्थ्य एवं महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में कार्यरत।
- उत्तराखंड — डॉ. ढाल सिंह बिसेन जी को उत्तराखंड का नया राज्यपाल नियुक्त किया गया। पर्यावरण संरक्षण एवं ग्रामीण विकास विशेषज्ञ।
- सिक्किम — श्री दुष्यंत गौतम जी को सिक्किम का नया राज्यपाल नियुक्त किया गया। पूर्व सांसद, संघर्ष एवं युवा नेतृत्व के लिए जाने जाते।

नोट: सभी नियुक्तियां 12 अक्टूबर 2026 को राष्ट्रपति के आदेशानुसार प्रभावी होंगी।

परिवहन विशेष - Parivahan Vishesh | प्रकाश संस्करण: राजकुमार यादव | (Editor in Chief: Sanjay Kumar Bhatia) | (संपादक: सैंजय कुमार बठिया) | अक्टूबर 2026 | (October 2026)

संगठन में मजबूत पकड़।

मुख्य बिंदु:

- कुल 6 राज्य: केरल, तमिलनाडु, ओडिशा, कर्नाटक, उत्तराखंड, सिक्किम
- आदेश की तिथि: 12 अक्टूबर 2026
- प्रभावी तिथि: पदभार ग्रहण करने से

- उद्देश्य: राज्यों में प्रशासनिक दक्षता और केंद्र-राज्य समन्वय को और मजबूत करना

निष्कर्ष: यह फेरबदल केंद्र सरकार की नई प्रशासनिक सोच को दर्शाता है, जिसमें अनुभवी और सामाजिक रूप से सक्रिय चेहरों को राजभवन की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

●●●●●

●●●●●

●●●●●

●●●●●

